<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

इरेडा ने उत्तर-पूर्व में अक्षय ऊर्जा विस्तार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई: सीएमडी

गुवाहाटी, 31 अक्टूबर 2025

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) में नवीकरणीय ऊर्जा (आरई) के विकास में तेज़ी लाने के लिए अपनी सुदृढ़ प्रतिबद्धता दोहराई गई है। आज गुवाहाटी में "पूर्वोत्तर क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा का वित्तपोषण" कार्यक्रम में संदेश देते हुए, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री प्रदीप कुमार दास द्वारा इस क्षेत्र की अपार हरित ऊर्जा क्षमता और समावेशी, सतत विकास को गति देने के लिए इरेडा की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में प्रकाश डाला गया।

श्री दास ने बताया कि भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता वित्तीय वर्ष 2014 से तीन गुना बढ़ गई है और वित्तीय वर्ष 2030 तक दोगुनी की जानी है , जिसके लिए 28 लाख करोड़ रुपये के अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी। जलविद्युत और सौर ऊर्जा द्वारा संचालित विशाल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता सहित, पूर्वोत्तर भारत के स्वच्छ ऊर्जा भविष्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। पूर्वोत्तर क्षेत्र द्वारा स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, जहाँ लगभग 5 गीगावाट नवीकरणीय क्षमता है – जोकि इसकी कुल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता का लगभग 60% है।

इरेडा द्वारा पहले ही इस क्षेत्र के लिए ₹3,500 करोड़ से अधिक के वित्तपोषण के लिए मंज़ूरी दी है, जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए रियायती ब्याज दरें शामिल हैं, जिनमें पूर्वोत्तर की परियोजनाओं के लिए 50 आधार अंकों की छूट और महिलाओं की नेतृत्व वाली परियोजनाओं के लिए 50 आधार अंकों की छूट देना शामिल है। पीएम-कुसुम और रूफटॉप सोलर जैसी प्रमुख योजनाओं के तहत, इरेडा द्वारा हज़ारों सौर ऊर्जा प्रतिष्ठानों को समर्थन दिया गया है, जिनमें त्रिपुरा में 3,800 सौर पंप और असम में कई रूफटॉप परियोजनाएँ शामिल हैं।

श्री दास ने ज़ोर देकर कहा कि मज़बूत ग्रिड कनेक्टिविटी, लक्षित सुधारों और नवोन्मेषी वित्तपोषण सहित , पूर्वोत्तर भारत और इसके बाहर एक हरित ऊर्जा केंद्र के रूप में उभर सकता है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि , "पूर्वोत्तर हमारा हरित क्षेत्र है और इरेडा इस क्षेत्र को स्वच्छ, किफ़ायती और विश्वसनीय नवीकरणीय ऊर्जा से सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।"

वास्तव में, आज की तारीख में इरेडा में अधिकांश व्यावसायिक प्रमुख पूर्वोत्तर से हैं, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा के विकास के लिए स्थानीय अवसरों और चुनौतियों की गहरी समझ संभव हो रही है।